Bhaktamar Stotra 45

रोग-उन्मूलन मंत्र

उद्भूत-भीषण-जलोदर-भार-भुग्नाः,
शोच्यां दशा-मुपगताश्-च्युत-जीविताशाः॥
त्वत्पाद-पंकज-रजो-मृत-दिग्ध-देहाः,
मर्त्या भवन्ति मकर-ध्वज-तुल्यरूपाः॥45॥

श्लोक का अर्थ

जो लोग भयंकर जलोदर रोग से पीड़ित होकर दुर्बल और आशाहीन हो चुके हैं, जिनका शरीर रोग के भार से झुक गया है और सौंदर्य मुरझा चुका है, वे भी यदि आपके चरण कमलों की रज का स्पर्श पाकर उस अमृतमयी कृपा से अभिसिंचित होते हैं, तो फिर से तेजस्वी और आकर्षक स्वरूप प्राप्त कर लेते हैं, मानो स्वयं कामदेव के समान दिव्य आभा से भर गए हों।